डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
Mobile number- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 1 (H) दिनांक - 04-07-2020

विषय- संस्कृत व्याकरण

पारिभाषिक शब्दावली

1. गुण- (अदेड़ गुण:) अत् एड् च गुण संज्ञ: स्यात्। अर्थात्अत् ह्रस्व आकार और एड्ए, ओ, गुण संज्ञा वाले हो अर्थात् उनकी गुण संज्ञा होती है।
2. वृद्धि- वृद्धिरेचि - आदेचि परे वृद्धिरेकादेश: स्यात्। गुणाऽपवाद: । कृष्णैकत्वम्। गङ्गौध:। देवैश्वर्यम्। कृष्णौत्कण्ठयम्। अर्थात्- अवर्ण से एच् परे हो तो पूर्व पर के स्थान में वृद्धि एकादेश होता है। यह गुण का अपवाद है। जैसे- कृष्ण + एकत्वम = कृष्णैकत्वम्। गंगा + ओघ:=गंगौघ: । देव + ऐश्वर्यम् देवैश्वर्यम्। कृष्ण+औत्कण्ठ्यम्= कृष्णौत्कण्ठ्यम् । "निश्वकाशो विधिरपवाद:" जिस विधि को कहीं अवकाश न हो उसे अपवाद कहते हैं। "वृद्धिरेचि" जहां प्राप्त होता है वहां "आदगुण:" अवश्य प्राप्त है । इसलिए "वृद्धिरेचि" अपवाद है । अपवाद विधि बलवान् होती है। इसलिए "वृद्धि रेचि" जहां प्राप्त होगा, वहां "आद गुण:" नहीं लगेगा।
3. प्रातिपदिक- अर्थवदधातुरप्रत्यय: प्रातिपदिकम्-धातुं प्रत्ययं प्रत्ययान्तं च वर्जयित्वा अर्थवच्छब्दस्वरुपं प्रातिपदिक संज्ञं स्यात् । अर्थात धातु प्रत्यय और प्रत्ययान्त को छोड़कर अर्थवान् सार्थक शब्द स्वरूप की प्रातिपदिक संख्या होती है । यथा- 'राम' शब्द अर्थ वान् है, अत: उसकी प्रातिपदिक संज्ञा हुई। यह न धातु है, न प्रत्यय है और न प्रत्ययान्त ही, क्योंकि अव्युत्पत्ति पक्ष में 'राम' शब्द की भी प्रत्ययान्त नहीं।
   नदी- यूस्त्र्याख्यौ नदी-ईदूदन्तौ नित्य स्त्रीलिङ्गौ नदी संज्ञौस्त:(वा०)प्रथमालिंग ग्रहणं च।पूर्व स्त्र्याख्यस्योपसर्जनत्वेऽपि इदानीं नदीत्वं वक्त व्यमित्यर्थ: । अर्थात दीर्घ इकारांत और ऊकारांत नित्य स्त्रीलिंग शब्द नदी संज्ञक हो ता है। नित्य स्त्रीलिंग उन शब्दों को कहते हैं जिनका केवल स्त्रीलिंग में प्रयोग होता है, अन्य लिंग में नहीं । जैसे -गौरी (पार्वती)शब्द नित्य स्त्रीलिंग है, क्योंकि इसका स्त्रीलिंग के अतिरिक्त अन्य किसी लिंग में प्रयोग नहीं होता। दीर्घ ईकारान्त भी है, अतः इसकी नदी संज्ञा होती है।
   (वा०)- प्रथमेति- प्रथम लिंग का भी यहां नदी संख्या में ग्रहण होता है अर्थात जो शब्द पहले नित्य स्त्रीलिंग हो और बाद के समास हो जाने से गौण हो जाए, उसकी भी अब भिन्न लिंग होने पर भी समास के पहले के लिंग के द्वारा नदी संज्ञा होती है।
   पूर्वम् इति- जो शब्द पहले अर्थात समोस होने से पूर्व स्त्रीलिंग रहा हो समापस होने पर उसके गौण हो जाने पर भी नदी संज्ञा कर देनी चाहिए।

'बहुश्रेयसी'शब्द में श्रेयसी शब्द समाज के पहले नित्य स्त्रीलिंग है पश्चात् बहू शब्द के साथ समास करने पर प्रथमलिंग को लेकर, इस समय स्त्री लिंग न होने पर भी नदी संज्ञा हो जाती है। नदी संज्ञा का फल सम्बुद्धि में ह्रस्व ,ङे,ङसि, ङस और ङि को आकर,आगम,आम,को नुट्,आगम तथा ङि को आम् आदेश ये चार है।

4. धि- शेषो ध्यसखि-शेष इति स्पष्टार्थम्।अनदी संज्ञौ ह्रस्वौ याविदुतौ तदन्तं सखि वर्ज धि संज्ञम्। अर्थात् - नदी संज्ञक जिसकी नदी संज्ञा हो से भिन्न ह्रस्व जो इकार और उकार तदन्त शब्द सखि शब्द को छोड़कर घि संज्ञक हो।

   शेष इति- इस सूत्र में शेष यह पद स्पष्टता के लिए अर्थात बिना शेष दिए भी घि संज्ञा उन्हीं ह्रस्व इकारांत और ह्रस्व उकारान्त शब्दों की होगी जिनकी नदी संज्ञा न हुई हो क्योंकि नदी संज्ञा घि संज्ञा की बाधिका है। उसके विषय को छोड़कर घि संज्ञा की प्रवृत्ति होगी, अतः शेष ग्रहण स्पष्टार्थ है।

   उदाहरण के लिए रवि ,कवि, मुनि,ऋषि, भानु, विष्णु और कृशानु आदि शब्द है। ये शब्द ह्रस्व इकारान्त और ह्रस्व उकारान्त है।

5. उपधा-अलोऽन्त्यात् पूर्व उपधा- अन्त्यादल:पूर्ववर्ण: उपधा संज्ञ:। अर्थात् अन्त्य अंदर से पूर्व की उपधा संज्ञक हो। उदाहरण-'सख् अन्' यहां अन्त्य अल् जकार है ,उससे पूर्व वर्ण अकार है, उसकी उपधा संज्ञा हुई।